UNIVERSITY NEWS 18 SEPTEMBER 2026

AMRIT VICHAR

नौकरी में यूपी के युवा चौथे पायदान पर

अमृत विचार, लखनऊ: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देश पर उच्च शिक्षा संस्थानों में कौशल आधारित पाठ्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। परंपरागत पाठ्यक्रमों को भी कौशल और वर्तमान जरूरतों के अनुसार संशोधित करने की प्रक्रिया करनी होगी। नई शिक्षा नीति के अनुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्च शिक्षा संस्थानों को निर्देश जारी करना आरंभ किया है। इसके अलावा अब शिक्षण संस्थानों में नवाचार, स्टार्टअप, कैरियर मेला, काउंसलिंग आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना अनिवार्य होगा। उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार के स्किल इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश के युवा कौशल आधारित रोजगार में देश में चौथे नंबर पर है। उच्च शिक्षा के बाद छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक रोजगार से जोड़ा जा सके इसके लिए कौशल आधारित शिक्षा पर जोर है।

गोमती पुस्तक महोत्सव | विद्यार्थियों से असफलताओं से सीखने और निरंतर आगे बढ़ने का किया आह्वान

तेजी से बदलती दुनिया में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

पुस्तक मेले में बोलते दिल्ली के उपराज्यपाल एवं प्रतिष्ठित राजनयिक सरदार तरनजीत सिंह संधू।

अमृत विचार : गोमती पुस्तक महोत्सव में गुरुवार को आयोजित विशेष सत्र कूटनीति से नेतृत्व तक-राष्ट्र सर्वोपरि में दिल्ली के उपराज्यपाल एवं प्रतिष्ठित राजनयिक सरदार तरनजीत सिंह संधू ने विद्यार्थियों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि पढ़ने की आदत, कौशल विकास, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना युवाओं को देश के विकास में प्रभावी योगदान देने के लिए तैयार करती है। उन्होंने विद्यार्थियों से असफलताओं से सीखने और निरंतर आगे बढ़ने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक युवराज मलिक ने सरदार तरनजीत सिंह संधू और लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जयप्रकाश सैनी का शॉल उढ़ाकर एवं पुस्तकें भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर संधू के जीवन और सार्वजनिक योगदान पर आधारित वीडियो भी प्रदर्शित की गई।

संधू ने अपने 36 वर्ष के विदेश सेवा अनुभव साझा करते हुए कहा कि तेजी से बदलती दुनिया में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। युवाओं को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप कौशल विकसित करने चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत की युवा आबादी देश की महत्वपूर्ण शक्ति है, जिसे सही अवसरों से जोड़ना जरूरी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में उन्होंने विद्यार्थियों से तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करने और अपनी सोच व निर्णय क्षमता को बनाए रखने की सलाह दी। संधू ने सरदार तेजा सिंह समुंदरी के जीवन का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से प्रेरणादायी व्यक्तित्वों के बारे में पढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने प्रेमचंद और भगवती चरण वर्मा जैसे साहित्यकारों का उल्लेख करते हुए कहा कि आधुनिक कौशल के साथ भारतीय साहित्य, संस्कृति और मूल्यों से जुड़ाव भी जरूरी है।

गजल और पॉप संगीत से सजी सांस्कृतिक संध्या

सांस्कृतिक संध्या में गजल गायक मिथिलेश लखनवी ने फरमाइश पर गजलें प्रस्तुत कीं। चौदहवीं का चांद... और दमादम मस्त कलंदर... जैसी प्रस्तुतियों को दर्शकों ने सराहा। उनके साथ तबले पर रत्नेश मिश्रा, गिटार पर राकेश आर्या, कीबोर्ड पर रिंकू राज और ऑक्टोपैड पर विकास कुमार ने संगत दी।

वहीं, पॉप आर्टिस्ट नैना लायल ने अपनी विशिष्ट आवाज और ऊर्जावान प्रस्तुति से दर्शकों का मनोरंजन किया। पॉप और सूफियाना अंदाज की उनकी प्रस्तुतियों का दर्शकों ने तालियों के साथ स्वागत किया।

I NEXT

'सिर्फ डिग्री से नहीं चलेगा काम AI के दौर में स्किल है गेमचेंजर'

गोमती पुस्तक महोत्सव में शामिल हुए दिल्ली के एलजी तरनजीत सिंह संधू

गोमती पुस्तक महोत्सव में उमड़ रही भारी भीड़

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (17 Sep): गोमती पुस्तक महोत्सव-2026 के तहत गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में 'कूटनीति से नेतृत्व तक-राष्ट्र सर्वोपरि' विषय पर विशेष सत्र आयोजित हुआ. दिल्ली के उपराज्यपाल एवं पूर्व राजनयिक तरनजीत सिंह संधू ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए पढ़ने की आदत, कौशल विकास, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी को जरूरी बताया. उन्होंने कहा कि किताबें व्यक्ति को जानकारी देने के साथ सोचने और नए विचार विकसित करने की क्षमता भी देती हैं. पढ़ाई के साथ खेलों से जुड़ने पर टीम भावना और अनुशासन विकसित होता है.

डिग्री के साथ कौशल पर जोर

संधू ने अपने 36 वर्ष के विदेश सेवा अनुभव साझा करते हुए कहा कि बदलती दुनिया में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है. युवाओं को भविष्य की जरूरतों के अनुसार कौशल विकसित करने होंगे. उन्होंने असफलताओं से सीखकर आगे बढ़ने और एआई का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने की सलाह दी. साथ ही निर्णय लेने की क्षमता को तकनीक पर पूरी तरह निर्भर न रखने की बात कही.

तरनजीत सिंह संधू ने स्टूडेंट्स से दिल खोलकर की बात.

बच्चों में वॉशेबल किताबों का क्रेज

महोत्सव के एक स्टॉल पर बच्चों के लिए वॉशेबल किताबें भी आकर्षण का केंद्र रहीं. दिल्ली से आए विक्रेता मनीष कुमार ने बताया कि इन किताबों पर स्केच पेन, जैल पेन, क्रेयॉन्स और वॉटर कलर से लिखने के बाद गीले कपड़े से साफ किया जा सकता है. उनके अनुसार बच्चों के लिए पजल, कर्सिव राइटिंग और चॉक बुक्स की भी वैरायटी है और बच्चे इन्हें पसंद कर रहे हैं.

पसंद की किताबें चुन रहे युवा

महोत्सव में युवाओं के बीच अपनी पसंद की किताबें तलाशने का उत्साह भी दिखा. लखनऊ विश्वविद्यालय आई रिपुल द्विवेदी ने बताया कि उन्होंने 'द मॉन्क हू सोल्ड हिज फेरारी' खरीदी. आशुतोष गुप्ता ने कहा कि महोत्सव का माहौल काफी रंगीन है और उन्होंने जॉनी लीवर की किताब खरीदी. अराधना सिंह चौहान ने यहां किताबों की कई वैरायटी मिलने की बात कही और 'थिंक एंड ग्रो रिच' खरीदी.

किताबों का हुआ अनावरण

कार्यक्रम में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की तीन पुस्तकों का अनावरण किया गया. इनमें सरदार तेजा सिंह समुंदरी के जीवन और योगदान से संबंधित पुस्तक भी शामिल रही. आयोजन में योगदान देने वालों और विभिन्न गतिविधियों में शामिल विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया.

DAINIK JAGRAN

'विकसित भारत के लिए टेक्नोलाजी संग नई सोच वाले युवाओं की भी जरूरत'

जासं • लखनऊ : बच्चे किताबें खूब पढ़ें पर खेलना कभी न छोड़ें। किताबों से हमें जो जानकारी मिलती है, वह कहीं से नहीं मिल सकती। इसी तरह खेलों से टीमवर्क की भावना विकसित होती है। छात्र-छात्राओं के लिए दोनों चीजें जरूरी हैं। विकसित भारत सिर्फ इन्फ्रास्ट्रक्चर और टेक्नोलाजी से नहीं बनेगा, इसके लिए नई सोच वाले युवाओं की भी जरूरत है। ये सोच व समझ किताबों से पैदा होती है। अधिकांश देशों में वृद्धजन की संख्या तेजी से बढ़ रही है, लेकिन हमारे देश में आधी से अधिक आबादी युवा है, इसलिए हमारे पास आगे बढ़ने के अवसर भी अधिक हैं। दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के गोमती पुस्तक मेले में 'डिप्लोमेसी से लीडरशिप तक-राष्ट्र सर्वोपरि' विषय पर आयोजित विशेष सत्र के मुख्य अतिथि थे।

गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में चल रहे गोमती पुस्तक महोत्सव में बच्चों को दुलारते दिल्ली के उपराज्यपाल सरदार तरनजीत सिंह संधू • हजरतगंज तिवारी

उन्होंने कहा कि यह शहर मुंशी प्रेमचंद, भगवती चरण वर्मा, श्रीलाल शुक्ल जैसे साहित्यकारों की कर्मभूमि रहा है। युवाओं से कहा कि एआइ को आप चलाएं, आपको एआइ न चलाए। तरनजीत सिंह संधू ने बताया कि 1998 में जब न्यूक्लियर टेस्ट हुआ तो वह भारतीय विदेश सेवा के तहत अमेरिका में थे, उस समय देश पर कई तरह की पाबंदियां लगा दी गईं, लेकिन एक साल बाद सारी पाबंदियां खत्म हुईं और हम अधिक मजबूती के साथ उभरे। यह दिखाता है कि कभी किसी समस्या से घबराना चाहिए। असफलता से सीख लीजिए और उसे अवसर में बदलने का प्रयास कीजिए। उन्होंने विद्यार्थियों को तेजा सिंह समुंद्री के जीवन से सीखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। इससे पहले राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की ओर से प्रकाशित तीन किताबों 'तमिल कहानियां (पंजाबी)', 'हरि सिंह नलवा' और 'वीर विसवे (पंजाबी)' का विमोचन किया। इस अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया के निदेशक युवराज मलिक और लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी उपस्थित रहे।

अभी बहुत सारे बच्चे स्पेस में जाएंगे : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के सदस्य युवराज मलिक ने शुभांशु शुक्ला के स्पेस में भेजने के पीछे कहानी के बारे में पूछा। इस पर उपराज्यपाल संधू ने कहा कि यह प्रधानमंत्री की सोच थी, जिसका जिम्मा उन्हें दिया गया था। वह अमेरिका में भारत के राजदूत (2020-2024) थे, तब उन्होंने अंतरिक्ष सहयोग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहा कि यह तो शुरुआत है, अभी तो बहुत सारे बच्चे स्पेस में जाएंगे।

डिग्रियों के लिए न बनाएं बच्चों पर दबाव : उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को पढ़ाएं, पर डिग्री के लिए दबाव न बनाएं। उन्होंने बताया कि जर्मनी में तैनाती के दौरान देखा कि वहां कौशल आधारित शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है। कार्यक्रम के बाद निकलते समय वह मोतीलाल नेहरू मेमोरियल इंटर कालेज की छात्राओं से मिलने के लिए रुक गए। मां के भाई उनकी जल्दी शादी करना चाहते थे, लेकिन उन्होंने जिद करके अपनी पढ़ाई पूरी की।

किशोरों की बदलती पाठकीय रुचियों पर साझा किए विचार

पुस्तक मेले के सत्र 'किशोर मन और साहित्य में नए पाठकों की नई दुनिया' में डा. अमिता दुबे, डा. कुमकुम शर्मा और प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने किशोरों की बदलती पाठकीय रुचियों और उनके अनुरूप साहित्य सृजन पर विचार साझा किए। सत्र का समन्वय अरुण सिंह ने किया। इसके बाद वित्तीय जागरूकता सत्र में संजीव त्रिपाठी, विशाल आर्या और श्रुति शर्मा ने इक्विटी, डेट, हाइब्रिड फंड, म्यूचुअल फंड की बुनियादी जानकारी दी।

गजल से सजी सांस्कृतिक संध्या, दर्शकों ने सराहा

सांस्कृतिक संध्या में गजल गायक मिथिलेश लखनवी ने गजलें प्रस्तुत कीं। 'चौदहवीं का चांद' और 'दमादम मस्त कलंदर' जैसी प्रस्तुतियों को दर्शकों ने सराहा। उनके साथ तबले पर रत्नेश मिश्रा, गिटार पर राकेश आर्या, कीबोर्ड पर रिंकू राज और ऑक्टोपैड पर विकास कुमार ने संगत दी। वहीं, पाप आर्टिस्ट नैना लायल ने अपनी आवाज और ऊर्जावान प्रस्तुति से दर्शकों का मनोरंजन किया।

AMRIT VICHAR

टीबी उन्मूलन समाज की सामूहिक जिम्मेदारी : प्रो. सैनी

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 76वें जन्मदिवस पर शहर के उच्च शिक्षण संस्थानों में निक्षय मित्र पहल के तहत टीबी मरीजों के सहयोग और पोषण के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए। लखनऊ विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. जय प्रकाश सैनी ने कहा कि टीबी उन्मूलन के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता जरूरी है। कार्यक्रम में प्रो. अरविंद मोहन, प्रो. अमिता कन्नौजिया, प्रो. राकेश द्विवेदी, कुलसचिव डॉ. भावना मिश्रा और टीबी इकाई से हमजा खान मौजूद रहे।

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय में शिक्षकों ने 50 क्षय रोगियों को गोद लेकर पोषण पोटली वितरित की। कुलपति प्रो. अजय तनेजा, कुलसचिव विकास और वित्त अधिकारी संतोष कुमार समेत शिक्षक व कर्मचारी उपस्थित रहे। डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में 76 मरीजों को गोद लिया गया। कुलपति आचार्य संजय सिंह ने पोषण पोटली बांटी। कुलसचिव रोहित सिंह, डीन एकेडमिक्स प्रो. वीके सिंह, कुलानुशासक प्रो. आशुतोष पांडेय, प्रो. सीके दीक्षित, प्रो. पी. राजीवनयन, प्रो. यशवंत वीरोदय, प्रो. अनामिका चौधरी, डॉ. पांचाली सिंह, डॉ. अशोक मिश्रा और डॉ. विजय शंकर शर्मा मौजूद रहे।

बीबीएयू में कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल ने कहा छह माह तक पोषण पोटली वितरण अभियान चलेगा। कार्यक्रम में प्रो. शालिनी अग्रवाल, प्रो. संजय कुमार, प्रो. रचना गंगवार, प्रो. महेंद्र कुमार पाढी और डॉ. मनोज कुमार डडवाल समेत शिक्षक व मरीज उपस्थित रहे।

AMRIT VICHAR

शनिवार से खुलेगा रीडिंग रूम

अमृत विचार, लखनऊ : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लखनऊ विश्वविद्यालय इकाई के कार्यकर्ता डेढ़ वर्ष से अधिक समय से बंद टैगोर लाइब्रेरी स्थित विश्वेश्वरनाथ रीडिंग रूम को खुलवाने के लिए प्रयासरत हैं। छात्रों ने इसे लेकर मानद पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. रोली मिश्रा से मुलाकात की और बातचीत में इसे खोलने पर सहमति बन गई है। विद्यार्थी परिषद के विकास तिवारी ने बताया कि छात्रों के लिए शनिवार से लाइब्रेरी का रीडिंग रूम खुल जाएगा।

'कला खुद से जुड़ने का मौका देती है'

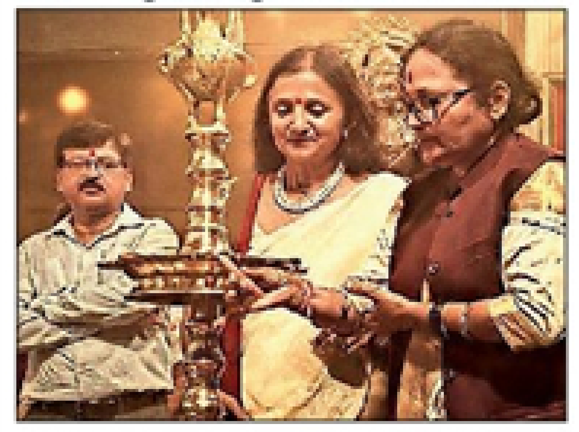

■ **NBT न्यूज, लखनऊ :** कला और संस्कृति के जरिए शांति और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश देने के उद्देश्य से वाइटस्वान आर्ट की ओर से गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में 11वें 'वाइटस्वान रिस्पॉन्सिबल आर्ट फेस्टिवल' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. अरविंद मोहन ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम शुरू किया। उन्होंने कहा कि कला हमें खुद से जुड़ने का मौका देती है। कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में इतिहासकार रवि भट्ट, कॉलेज ऑफ आर्ट्स ऐंड क्राफ्ट के प्रिंसिपल और डीन प्रो. जयकृष्ण अग्रवाल, डॉ. अंजली निगम, प्रो. अमिता कनौजिया मौजूद रहीं।

TIMES OF INDIA

Sandhu urges youth to read, think freely, learn from life

Amjanaya Singh | TNN

Delhi Lt Governor Taranjit Singh Sandhu interact with students at Gomti Book Festival

Lucknow: Today's generation has access to an abundance of content, yet time for deep reading is shrinking. "We must not just tell our children to read books, we must explain the value of books and help them cultivate reading habits," said Delhi Lt Governor Taranjit Singh Sandhu while interacting with students at the Gomti Book Festival on Thursday.

Sandhu said children are not mere consumers of books, they should grow into future writers, poets, researchers and thinkers. He called for strengthening the culture of reading and writing across schools, universities and districts.

"Reading helps develop the ability to think, question and create new ideas. Writing enables people to express their thoughts and experiences while literature brings different cultures, languages and perspectives together," said Sandhu. He advised students to use AI wisely. "While technology can be a useful tool, do not become completely dependent on it for thinking and decision-making," he said.

SWATANTRA BHARAT

टीबी उन्मूलन समाज की सामूहिक जिम्मेदारी

समाज के साथ और हमारे समेकित प्रयासों से भारत से टीबी का उन्मूलन होना तय

स्वतंत्र भारत संवाददाता लखनऊ। टीबी उन्मूलन के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता आवश्यक है। निक्षय मित्र के रूप में टीबी मरीजों को पोषण सहयोग देना मानवता और सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्वपूर्ण उदाहरण है। लखनऊ विश्वविद्यालय अपनी पुरातन सामाजिक सहयोग की संस्कृति के अनुरूप आज फिर समाज के साथ है और हमारे समेकित प्रयासों से भारत से टीबी का उन्मूलन तय है। यह विचार बृहस्पतिवार को विश्वविद्यालय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 76वें जन्मदिवस पर कुलपति प्रो जय प्रकाश सैनी ने कहा कि विगत वर्षों की भांति लखनऊ विश्वविद्यालय टीबी मरीजों के उपचार के साथ-साथ उनके पोषण और सामाजिक सहयोग के लिए निरंतर प्रयास करता रहेगा। इस दौरान लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा 54 टीबी मरीजों को गोद लेकर विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा निक्षय मित्र के रूप में गोद लेने की पहल के तहत पोषण पोटली का वितरण किया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने इन मरीजों के अगले छह माह के पोषण की जिम्मेदारी ली है। इस पहल का उद्देश्य उपचाराधीन टीबी मरीजों को नियमित पोषण सहयोग उपलब्ध कराकर उनके स्वास्थ्य लाभ में सहायता करना है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय इन मरीजों को स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श भी उपलब्ध करा रहा है। इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा टीबी जागरूकता और उन्मूलन के लिए एक पोस्टर का विमोचन भी किया गया, जिसका उद्देश्य लोगों को टीबी उन्मूलन के लिए जागरूक करना है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ के माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्र विभिन्न विभागों और महाविद्यालयों सहित गोद लिए गए गाँव में जाकर पोस्टर और विशेषज्ञों के द्वारा इस अभियान को जन अभियान बनाने का काम करेंगे। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा टीबी जागरूकता, मरीजों को गोद लेने तथा पोषण सहयोग के क्षेत्र में निरंतर गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। निक्षय मित्र पहल के माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक टीबी मरीजों के साथ सीधे जुड़कर उनके उपचार की अवधि में पोषण संबंधी सहयोग प्रदान करेंगे। यह पहल टीबी उन्मूलन अभियान में शैक्षणिक संस्थानों और समाज की भागीदारी को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम में कला संकाय के अध्यक्ष प्रो अरविंद मोहन, डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रो अमिता कन्नौजिया, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ के निदेशक प्रो राकेश द्विवेदी व कुलसचिव डॉ भावना मिश्रा मौजूद थे।

AAJ

विश्वविद्यालय स्थित आरोग्य भवन में बलरामपुर चिकित्सालय द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पंचायती राज मंत्री भूपेंद्र चौधरी राज्यमंत्री नटवर गोयल एवं लखनऊ उत्तर क्षेत्र के विधायक डॉ. नीरज बोरा ने रक्तदाताओं से भेंटकर उनका उत्साहवर्धन किया तथा उन्हें प्रमाण पत्र वितरित किये इस अवसर पर पंचायती राज मंत्री भूपेंद्र चौधरी ने रक्तदाताओं को बधाई देते हुये कहा कि स्वस्थ संवेदनशील एवं सशक्त समाज के निर्माण के लिए रक्तदान आवश्यक है।

रक्तदान के माध्यम से जरूरतमंद लोगों की सहायता की जा सकती है और यह सामाजिक जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण उदाहरण है।विधायक डॉ. नीरज बोरा ने कहा कि समाज के प्रत्येक स्वस्थ एवं सक्षम व्यक्ति को आगे आकर नियमित रूप से रक्तदान करने का संकल्प लेना चाहिए।

AAJ

युवाओं की क्षमता को सही अवसरों से जोड़ना जरूरी-संधू

HINDUSTAN

रक्तदान कर लोगों को किया प्रेरित

लखनऊ, प्रमुख संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 76वें जन्मदिन पर भाजपा लखनऊ महानगर की ओर से आयोजन किए गए। लखनऊ विश्वविद्यालय के पुराने परिसर स्थित आरोग्य भवन में आयोजित रक्तदान शिविर में मंत्री भूपेन्द्र चौधरी, विधायक डॉ. नीरज बोरा, नटवर गोयल एवं उपाध्यक्ष सौरभ वाल्मीकि ने सहभागिता कर रक्तदान जैसे पुनीत एवं मानवीय कार्य को प्रोत्साहित किया।

विधायक ओपी श्रीवास्तव ने भी पीएम मोदी के जन्मदिन पर गुरुवार को दीये जलाए।

HINDUSTAN

डिग्री से आगे कौशल, सोच विकसित करें युवा : तरनजीत

पुस्तक महोत्सव

लखनऊ, प्रमुख संवाददाता। बदलती दुनिया में युवाओं को केवल डिग्री तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि कौशल, तकनीक, अनुशासन और स्वतंत्र सोच को भी व्यक्तित्व का हिस्सा बनाना चाहिए। यह बात दिल्ली के उपराज्यपाल एवं राजनयिक तरनजीत सिंह संधू ने गुरुवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित गोमती पुस्तक महोत्सव-2026 के विशेष सत्र 'कूटनीति से नेतृत्व तक, राष्ट्र सर्वोपरि' में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान कही।

अपने 36 वर्षों के विदेश सेवा अनुभव साझा करते हुए संधू ने कहा कि भारत की युवा आबादी देश की बड़ी ताकत है। युवाओं को सही अवसर और दिशा देकर उनकी ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण से जोड़ा जा सकता है। महोत्सव के अन्य सत्रों में किशोर साहित्य और वित्तीय जागरूकता पर चर्चा हुई। सांस्कृतिक संध्या में गजल गायक मिथिलेश लखनवी और पॉप कलाकार नैना लायल की प्रस्तुतियों ने मन मोहा।

DAINIK JAGRAN

'ग्राहक सुरक्षित, कारोबारियों की बढ़ेगी जिम्मेदारी'

यूपीआइ भुगतान

प्रो. एमके अग्रवाल • स्वयं

लखनऊ : यूपीआइ ने भुगतान को इतना आसान बना दिया है कि आज चाय की दुकान से लेकर बड़े शोरूम तक क्यूआर कोड डिजिटल लेनदेन का सबसे सहज माध्यम बन चुका है। ऐसे में चुनिंदा बड़े व्यापारी भुगतानों पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) लागू होने की घोषणा स्वाभाविक रूप से चर्चा का विषय है। 15 अक्टूबर 2026 से निर्धारित पी-टू-एम (पर्सन-टू-मर्चेंट) लेनदेन पर 0.4 प्रतिशत एमडीआर लागू होगा। हालांकि सबसे महत्वपूर्ण राहत यह है कि इसका सीधा बोझ ग्राहक पर नहीं पड़ेगा। दो हजार तक के पात्र यूपीआइ भुगतान और पी-टू-पी (पर्सन-टू-पर्सन) लेन-देन पर एमडीआर नहीं लगेगा। यूपीआइ के जरिये भुगतान करने की सुविधा पहले की तरह बनी रहेगी, लेकिन यहां एक अप्रत्यक्ष खतरा जरूर है। कारोबारी यदि एमडीआर को अपनी लागत का हिस्सा मानकर वस्तुओं या सेवाओं की कीमत बढ़ाते हैं तो उसका असर ग्राहक तक पहुंच सकता है। व्यापारियों के लिए यह बदलाव अधिक महत्वपूर्ण है। 0.4 प्रतिशत छोटी दर दिखाई देती है, लेकिन बड़ी राशि के नियमित डिजिटल भुगतान में यह कारोबारी लागत बढ़ा सकती है। 10 हजार रुपये के भुगतान पर 40 रुपये और 50 हजार रुपये पर 200 रुपये एमडीआर लगेगा। हालांकि प्रति लेनदेन इसकी अधिकतम सीमा 300 ही रखी गई है। छोटे कारोबारियों को भी सुरक्षा दी गई है। निर्धारित सीमा तक प्राप्तियों पर शून्य-एमडीआर व्यवस्था जारी रहेगी। कारोबारी के लिए इसे केवल अतिरिक्त खर्च के रूप में देखना भी उचित नहीं होगा। यूपीआइ से नकदी रखने, गिनने, बैंक में जमा कराने, छुट्टे की व्यवस्था और नकदी प्रबंधन की कई परेशानियां कम होती हैं। डिजिटल भुगतान से लेनदेन का रिकार्ड भी व्यवस्थित रहता है। यानी एमडीआर एक लागत है, लेकिन डिजिटल भुगतान से मिलने वाली सुविधा भी कारोबारी मूल्य रखती है। एमडीआर का सकारात्मक पक्ष यह है कि इससे भुगतान व्यवस्था से जुड़े बैंकों और अन्य भागीदारों को आर्थिक आधार मिलेगा। लंबे समय तक मुफ्त या बेहद कम लागत वाली डिजिटल भुगतान व्यवस्था को चलाने के लिए तकनीकी ढांचे, साइबर सुरक्षा और नेटवर्क में लगातार निवेश जरूरी है। ऐसे में एमडीआर को यूपीआइ के भविष्य के बुनियादी ढांचे की लागत के रूप में भी देखा जा सकता है।

- लेखक लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में प्रोफेसर हैं।

NBT

'बदलती दुनिया से तालमेल के लिए डिग्री काफी नहीं'

गोमती पुस्तक मेले में पहुंचे दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू

■ **NBT न्यूज, लखनऊ :** दुनिया तेजी से बदल रही है और इस बदलती दुनिया में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा के साथ ऐसे कौशल विकसित करने चाहिए जो बदलती दुनिया की जरूरतों के अनुरूप हों। यह बात गुरुवार को दिल्ली के उपराज्यपाल एवं पूर्व राजनयिक सरदार तरनजीत सिंह संधू ने लखनऊ विश्वविद्यालय में चल रहे गोमती पुस्तक मेले के विशेष सत्र 'कूटनीति से नेतृत्व तक-राष्ट्र सर्वोपरि' में कही। वे युवाओं से अपने 6 दशकों की विदेश सेवा के अनुभव साझा कर रहे थे। इस दौरान उनके साथ बातचीत करने के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक युवराज मलिक भी मंच पर मौजूद रहे।

पढ़ना सोचने और समझने की क्षमता विकसित करता है : सरदार तरनजीत सिंह संधू ने कहा कि पढ़ना व्यक्ति को सूचना देने के साथ-साथ सोचने, समझने और नए विचार विकसित करने की क्षमता प्रदान करता है। आज की व्यस्त जीवनशैली में पढ़ने के लिए समय निकालना चुनौती बनता जा रहा है, ऐसे में पुस्तकों का महत्व और बढ़ जाता है।

तेजा सिंह समुंदरी के जीवन से लें प्रेरणा

सरदार संधू ने सरदार तेजा सिंह समुंदरी के जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका जीवन देश के स्वतंत्रता संघर्ष और नेतृत्व की प्रेरणादायी मिसाल है। उन्होंने विद्यार्थियों से ऐसे व्यक्तित्वों के जीवन के बारे में पढ़ने और उनके योगदान को समझने का आह्वान किया। लखनऊ की साहित्यिक परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने प्रेमचंद और भगवती चरण वर्मा जैसे साहित्यकारों को याद किया और कहा कि लखनऊ साहित्य, संस्कृति और विचार की समृद्ध परंपरा वाला शहर है और विद्यार्थियों को अपने साहित्य एवं संस्कृति से परिचित होना चाहिए। संधू ने कहा कि विकसित भारत का निर्माण केवल तकनीक और आधुनिक साधनों से नहीं होगा। इसके लिए भारतीय परंपरा, संस्कृति, साहित्य, ज्ञान और मूल्यों के साथ आधुनिक कौशल का समन्वय आवश्यक है।

युवाओं को सही अवसरों से जोड़ना जरूरी : संधू ने कहा कि भारत की युवा आबादी देश की महत्वपूर्ण शक्ति है। इस क्षमता को सही अवसरों और कौशल से जोड़कर देश की वैश्विक भूमिका को और मजबूत किया जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपनी क्षमता को पहचानने और उसे सकारात्मक दिशा में उपयोग करने का आग्रह किया।

तीन पुस्तकों का हुआ अनावरण : कार्यक्रम के दौरान नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों का अनावरण किया।